epaper
हिन्दुस्तान

• राजधानी में चिकन के कपड़ों का सालाना कारोबार 300 करोड़ का • कोरोनाकाल के बाद से झेलना पड़ रहा नुकसान

चिकनकारी की चमक उपेक्षा से फीकी पड़ी

03 के करीब लोग चिकन कारोबार से जुड़े हैं शहर में

02 साल से कोरोना की वजह से कारोबार पर असर

मुद्दों की बात 12

कोरोना के बाद चिकन कपड़ों के कारोबार पर काफी असर पड़ा है।

14/02/2022

लखनऊ | वरिष्ठ संवाददाता

लखनवी चिकनकारी ने दुनियाभर में अपनी पहचान बनाई है, लेकिन सियासत का सहारा न मिलने से यह कारोबार सिमटता जा रहा है। कोरोना महामारी के कारण पर्यटकों की संख्या कम होने से मांग घटती जा रही है, जिससे चिकन की चमक भी फीकी पड़ने लगी। कारोबारियों ने कई बार चिकन हैंडीक्रॉफ्ट का एचएसएन कोड अलग करने की मांग की, जिससे लखनऊ चिकन को एक अलग पहचान मिल सके, लेकिन कुछ नहीं हुआ। इससे सुबह से शाम तक कपड़ों पर सुई से महीन कारीगरी करने वालों की दुनिया बहुत बदरंग हो गई है।

कोरोना ने कारोबार पर डाला असर: लखनऊ चिकन हैंडीक्राफ्ट एसोसिएशन के वरिष्ठ उपाध्यक्ष सुरेश छबलानी ने बताया कि कोरोना महामारी से पहले राजधानी में करीब तीन लाख लोग चिकनकारी कारोबार से जुड़े थे। सालाना लगभग 300 करोड़ का कारोबार होता था, लेकिन पिछले दो सालों से कारोबार पूरी तरह चौपट हो गया। इससे कारोबारियों को काफी नुकसान हुआ।

विदेश में कारोबार के लिए 1.50 लाख रुपये यात्रा भत्ता: चिकन कारोबारी पिछले 15 वर्षों से जनप्रतिनिधियों से लेकर शासन स्तर तक चिकन कारोबार को बढ़ावा देने की मांग की, लेकिन धरातल पर कुछ नहीं हुआ। हालांकि जिला उद्योग एवं उद्यम प्रोत्साहन केंद्र ने लखनऊ की चिकनकारी को एक जिला एक उत्पाद (ओडीओपी) में शामिल किया है। योजना के तहत चिकन के कारोबार और उसके निर्यात को लेकर कई योजनाएं चलाई जा रही हैं। निर्यात के लिए भी चिकन उद्यमियों को विदेश में कारोबार के लिए 1.50 लाख रुपये यात्रा भत्ता दिया जाता है, लेकिन बैंक लोन मिलने में अभी भी कई तरह की दिक्कतें आती हैं।

कारोबारियों की प्रमुख मांगें

- लखनवी चिकन को ब्रांड छवि बनाकर पैकेजिंग में सुधार किया जाए
- चिकन कारीगरों को प्रशिक्षण देने के लिए ट्रेनिंग सेंटर खोले जाएं
- ज्यादा निर्यात वाले देशों में रोड शो व शिल्प उत्सव आयोजित कर चिकन का प्रचार-प्रसार
- कारीगरों को सरकारी योजनाओं के साथ आर्थिक लाभ मिले
- बिचौलियों की भूमिका खत्म करने के लिए गांव में चिकन सेंटर खोले जाएं
- चिकन उत्पादों के लिए विशिष्ट बाजार (चिकन हब) बनाया जाए

चिकन में लगने वाला जॉर्जेट चीन से आता है

चिकन कारोबारी हर्षित अग्रवाल ने बताया कि चिकनकारी पर चीन दो तरफ से कब्जा जमा रहा है। एक तो मशीन से तैयार चिकन के कपड़ों को कम कीमत में बेचकर लखनवी चिकनकारी की मांग को आधा कर दिया है। दूसरा लखनऊ में तैयार होने वाले चिकन में लगने वाले जार्जेट कपड़ा चीन से ही आता है।

आपबीती

पर्यटन की कमी से पड़ा कारोबार पर बुरा असर

चौक के चिकन कारोबारी कृष्णा पाल ने बताया कि राज्य सरकार ने ओडीओपी के तहत कई योजनाएं चलाइं, लेकिन कोरोना के बाद अधिकांश योजनाएं अधर में पड़ी है। उन्होंने लखनवी चिकन की ब्रांड छवि बनाने के लिए पैकेजिंग में कोई सुधार नहीं किया। पर्यटकों की कमी से कारोबार ठप हो गया है। हैदराबाद, मुंबई में होने वाले ट्रेड फेयर भी नहीं लगे।

जीएसटी के बाद कारोबार 60 गिरा

- कैंट रोड स्थित चिकन कारोबारी नितिन रस्तोगी ने बताया कि चिकनकारी विशुद्ध रूप से हैंडीक्राफ्ट है, लेकिन इस पर जीएसटी लगा दिया गया। इससे कारोबार में 60 फीसद कमी आई है।
- व्यापारी रमेश कुकरेजा ने बताया कि डिमांड न होने पर कारोबारी कम माल तैयार कर रहे हैं, इससे कारीगरों को काम नहीं मिल रहा। जीएसटी दर हटाने के लिए राज्य सरकार से लेकर केंद्र सरकार तक फरियाद लगाई गई लेकिन कुछ नहीं हुआ।